चित्रःगूगल से साभार

मैं दिनकर दिनभर का हारा

मैं दिनकर दिनभर का हारा,
मुख है म्लान मलिन!
अनुचर जैसी है दिनचर्या,
दुर्दिन के हैं दिन!!

उदीयमान उद्दाम उन्नमन,
निरभिमान नियमित!
अस्तकाल अस्तित्व अस्तगत,
अनुपस्थिति अनुमित!

मैं नभचर नभसर नित तिरता,
लगता खिला नलिन!
मैं दिनकर दिनभर का हारा,
मुख है म्लान मलिन!!

सुरभिकाल सुकुमार सुशोभित,
कुसुमाकर कुसुमित!
विषुवकाल विकराल विलोकित,
आलोकित अतिमित!

दृग द्रुतगति दिननग दिग्दर्शन,
प्रच्छदपट पल छिन!
मैं दिनकर दिनभर का हारा,
मुख है म्लान मलिन!!

धीर वीर ध्वंसक-ध्वज ध्वंसक,
रूप धूप धवलित!
कालजयी लेकिन कुल-कज्जल,
राहु केतु कवलित!

तट कुहरित किरणित कटिरेखा,
कोमल किन्तु कठिन!
मैं दिनकर दिनभर का हारा,
मुख है म्लान मलिन!!

घट्यमान घटनीय घटित नित,
घटनायें अघटित!
विद्यमान रवि विश्व प्रकाशित,
प्रत्याशित प्रकटित!

मैं विकसित वितरित वसुधा हित,
विघटित हूँ अनुदिन!
मैं दिनकर दिनभर का हारा,
मुख है म्लान मलिन!

सच्चरित्र चरितार्थ चतुर्दिक्,
समाचरित समुचित!
अग्निमित्र अनिवार्य अवर्णिक,
अनादरित अनुचित!

मैं विचरित विरचित रचना चिर,
स्वरचित सोच सचिन!
मैं दिनकर दिनभर का हारा,
मुख है म्लान मलिन!

अनुचर जैसी है दिनचर्या,
दुर्दिन के हैं दिन!

अशोक व्यग्र
भोपाल